निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृतीस्ततस्ततस्त्या विनियन्तुमक्षमा।

नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीरुदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः ॥२७॥

अन्वय-

ततः द्रुपदात्मजा द्विषताम् सिद्धिं निशम्य ततस्त्याः अपाकृतीः विनियन्तुम् अक्षमा (सती) नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः गिरः उदाजहार ॥२७॥

अर्थ-

द्रुपदसुता शत्रुओं की सफलता सुनकर, उनके द्वारा होने वाले अपकारों को दूर करने में अपने को असमर्थ समझ कर राजा युधिष्ठिर के क्रोध को प्रज्ज्वलित करने वाली वाणी में (इस प्रकार) बोली ॥२७॥

टिप्पणी-

स्त्रियो को पति के क्रोध को उद्दीप्त करने वाली कला खूब आती है। दुर्योधन के अभ्युदय की चर्चा सुन कर द्रौपदी को वह सब विपदायें स्मरण हो आई, जो अतीत में भोगनी पड़ी थी। उसने अनुभव किया कि ये हमारे निकम्मे पति अभी तक उतना प्रतिकार भी नहीं कर सके । अतः उसने युधिष्ठिर के क्रोध को उत्तेजित करने वाली बातें कहना आरम्भ किया । यहाँ पदार्थहेतुक काव्यलिंग अलङ्कार है ।

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्।

तथाऽपि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधय: ॥२८॥

अन्वय-

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितम् अनुशासनम् अधिक्षेप: इव भवति । तथापि निरस्तनारीसमया दुराधय: माम् वक्तुम् व्यवसाययन्ति ॥२८॥

अर्थ-

(यद्यपि) आप जैसे राजाओं के लिए स्त्रियो द्वारा काही गई अनुशासन सम्बन्धी बातें (आप के) तिरस्कार के समान है तथापि नारी जाति सुलभ शालीनता को छुड़ानेवाली (छोड़ने के लिए विवश करने वाली) ये मेरी दुष्ट मनोव्यथाएं मुझे बोलने के लिए विवश कर रही हैं ॥२८॥

टिपण्णी-

द्रौपदी कितनी बुद्धिमत्ती थी। उसकी भाषण-पटुता द्रष्टव्य है। कितनी विनम्रता में वह अपना अभिप्राय प्रकट करती है। उसके कथन का तात्पर्य यह है कि दु:खी व्यक्ति के लिए अनुचित कर्म भी क्षम्य होता है। यहाँ काव्यलिंग और उपमा की संसृष्टि हुई है ।